om 23 Final_Page 1 and 2 02/03/2015 10:20 Page 3

गीता और भगवान

'भगवान और गीता' - यह जो विषय है, यह बहुत ही उत्तम है क्योंकि 'भगवान' शब्द आत्माओं में से उत्तम जो परमात्मा है, उनका वाचक है और गीता सभी शास्त्रों में उत्तम है। फिर इन दोनों से मनुष्य का जीवन भी उत्तम बनता है और उससे प्राप्ति भी उत्तम होती है। परन्तु आज, जैसे परमात्मा के विषय में अनेक मतें हैं, वैसे ही गीता पर भी अनेक टीकाएं और टिप्पणियां हैं। अत: गीता के बारे में स्पष्ट, यथार्थ और निश्चयात्मक रीति से जानने की आवश्यकता है।

भगवान ने स्वयं बतलाया है कि देह अलग है, देही अलग है। गीता में देह को 'क्षेत्र' और आत्मा को 'क्षेत्रज्ञ' कहा गया है और दोनों का भली-भांति भेद स्पष्ट किया गया है। अत: शारीरिक रूप, जो कि लोगों के मन में याद हो आता है को 'भगवान' नहीं कहेंगे बल्कि जिस चेतन सत्ता ने शरीर का आधार लिया उसे 'भगवान' कहेंगे।

गीता में किसके महावाक्य हैं? - वास्तव में गीता की उत्तमता ही इसका कारण है कि यह स्वयं भगवान के महावाक्यों का संकलन है। तभी तो इसका नाम भी 'भगवद्गीता' है। अन्य किसी भी शास्त्र का ऐसा नाम नहीं है। परन्तु इसका नाम 'भगवद्गीता' मानते हुए भी बहुत से लोग देवकी-पुत्र श्रीकृष्ण को इसका आदि वक्ता मानते हैं। अत: संसार के करोड़ों लोग, जो कि श्रीकृष्ण को भगवान नहीं मानते, वे इसे भी भगवान के महावाक्यों का ग्रन्थ नहीं मानते, बल्कि इसे एक महात्मा के वचनों का संग्रह मानते हैं। इससे गीता का माहात्म्य बहुत कम हो गया। अत: इस बात को आज स्पष्ट करने की ज़रूरत है कि भगवद्गीता में जो 'भगवान' शब्द है, वह किसका वाचक है अर्थात् गीता के भगवान का स्वरूप क्या है। भगवान के स्वरूप को यथार्थ रीति से जाने बिना गीता का ठीक अर्थ नहीं समझा जा सकता और भगवान की जो आज्ञा है कि 'तुम मुझे याद करो, मुझमें मन लगाओ (मन-मनाभव)' आदि-आदि, मनुष्य उसका पालन भी नहीं कर सकता और उसका पालन किये बिना वह योगयुक्त और जीवनमुक्त भी नहीं हो सकता।

भगवान के स्वरूप की सही पहचान के लिए गीता का पहला निर्देश - आज गीता-ज्ञान का दाता देवकी-नंदन, मोर-मुकुट-धारी श्रीकृष्ण को माना जाता है। गीता में एक ऐसा चित्र भी प्राय: लगा रहता है। इस प्रकार गीता के प्रसंग में 'भगवान' शब्द का उच्चारण होते ही गीता-प्रेमियों के मन में इस दैहिक चित्र की ही याद आती है। परन्तु भगवान ने स्वयं बतलाया है कि देह अलग है, देही अलग है। गीता में देह को 'क्षेत्र' और आत्मा को 'क्षेत्रज्ञ' कहा गया है और दोनों का भली-भांति भेद स्पष्ट किया गया है। अत: शारीरिक रूप, जो कि लोगों के मन में याद हो आता है को 'भगवान' नहीं कहेंगे बल्कि जिस चेतन सत्ता ने शरीर का आधार लिया उसे 'भगवान' कहेंगे। गीता में भगवान के स्पष्ट महावाक्य हैं कि ''मैं अपनी प्रकृति को अधीन करके प्रगट होता हूँ (प्रकृति स्वाम् अधिष्ठाय संभवामि...)। अत: शरीर को 'भगवान' समझना गलत है, बल्कि शरीर रूपी प्रकृति को जो अधीन करने वाली सत्ता है, वही भगवान है। गीता में अन्य स्थलों पर भी लिखा है कि प्रकृति अलग है, पुरुष अलग है और भगवान तो पुरुषोत्तम है। इसलिए गीता में कहा है कि - मैं अव्यक्त हूँ, व्यक्त शरीर में आता हूँ परंतु बुद्धिहीन लोग मुझे व्यक्त (दैहिक रूप वाला) मान लेते हैं (अव्यक्तम् व्यक्तिमापन्न मन्यते माम् अबुद्धय:)। शरीर से भिन्न अव्यक्त एवं दिव्य होने के कारण ही तो भगवान ने कहा कि - 'मैं तुझे दिव्य चक्षु देता हूँ, तू उस द्वारा मुझ परमात्मा का वह वास्तविक रूप देख। अत: गीता का पहला निर्देश यह है कि भगवान को व्यक्त या दैहिक रूप वाला मानना बुद्धिहीनता है।

भगवान का दिव्य रूप कौनसा है? - अब प्रश्न उठता है कि यदि मोर-मुकुटधारी शारीरिक रूप, भगवान का नहीं है तो उनका निज दिव्य रूप कौनसा है? इस बात को समझने के लिए पहले 'आत्मा' अथवा 'पुरुष' को जानना ज़रूरी है। आत्मा के बारे में भगवान ने कहा है कि जैसे इस लोक को एक सूर्य प्रकाशित करता है, वैसे ही इस क्षेत्र अथवा शरीर को आत्मा प्रकाशित करती है, (यथा प्रकाशयति एक: कृत्स्नं लोकम् इमं रवि, क्षेत्रं क्षेत्री तथा कृत्स्नं प्रकाशयति भारत)। अत: स्पष्ट है कि आत्मा एक ज्योतिस्वरूप, चेतन सत्ता है जो कि शरीर में सर्वव्यापक नहीं है, बल्कि जैसे इस लोक में सूर्य एक स्थान पर होते हुए लोक को प्रकाशित करता है, वैसे ही आत्मा भी शरीर में एक स्थान पर है। यह आत्मा ज्योति-बिन्दु रूप है और भृकुटि में ही इसका वास है जहां पर लोग प्राय: बिन्दी अथवा तिलक लगाया करते हैं। इसीलिए ही गीता में भी भगवान ने कहा है कि - शरीर छोड़ते समय भृकुटि के बीच जो आत्मा है, उसमें ठीक रीति से स्थित होने वाला ही परम पुरुष परमात्मा के पास जाता है (प्रयाणकाले भ्रुर्वोमध्ये प्राणम् आवेश्य सम्यक सतं परं पुरुषमुपयति दिव्यं..। तो जैसे आत्मा अथवा पुरुष ज्योति-बिन्दु रूप अथवा ज्योति का एक अणु मात्र है, वैसे ही परमात्मा भी ज्योतिर्बिन्दु रूप ही है। वह केवल धर्म-गलानि के समय शरीर लेता है। इसीलिए गीता में भगवान ने कहा है कि 'मैं सभी देहधारियों में श्रेष्ठ हूँ (अधियज्ञोहम् एवं अत्र देहे, देहमृताम् वर)। अब आगे अगले अंक में।

'मैं' और बाधाएं... - पेज 6 का शेष

क्या हम इन लोगों को असफल मानेंगे? वे समस्याएं न होने की वजह से नहीं, बल्कि समस्याओं की वजह से कामयाब हुए; लेकिन नकारात्मक सोच वाले लोगों को लगता है कि ऐसे लोगों को कामयाबी ''केवल तकदीर की वजह'' से मिली।

सफलता की सारी कहानियों के साथ महान असफलताओं की कहानियाँ भी जुड़ी हुई हैं। फर्क केवल इतना था कि हर असफलता के बाद वे जोश के साथ फिर उठ खड़े हुए। इसे पीछे धकेलने वाली नहीं, बल्कि आगे बढ़ाने वाली नाकामयाबी कहते हैं। हम सीखते हुए आगे बढ़ते हैं। हम अपनी असफलताओं से सबक लेते हुए आगे बढ़ते हैं।

सन् 1914 में थॉमस एडीसन की फैक्ट्री जल गई। उस समय उनकी उम्र 67 साल थी। एडीसन जवान नहीं रह गए थे और फैक्ट्री का बीमा बहुत थोड़े पैसों का था। इसके बावजूद अपनी ज़िन्दगी भर की मेहनत को धुआं बन कर उड़ते देख कर उन्होंने कहा, ''यह बरबादी बहुत कीमती है। हमारी सारी गलतियाँ जल कर राख हो गईं। मैं ईश्वर को धन्यवाद देता हूँ कि उसने हमें नई शुरुआत करने का मौका दिया।'' उस तबाही के तीन हफ्ते बाद ही, उन्होंने फोनोग्राम का आविष्कार किया। क्या शानदार नज़रिया है।

पुणे-धनकवाड़ी। प्रकाश जावड़ेकर,पर्यावरण मंत्री के साथ ज्ञान चर्चा के पश्चात् ईश्वरीय सेवाओं से अवगत कराते हुए ब्र.कु. सुलभा तथा ब्र.कु. आरती।

चन्द्रपुर-यहा.। डिप्युटी मिनिस्टर हंसराज अहिर,केन्द्र सरकार को मीडिया की सेवाओं से अवगत कराते हुए ब्र.कु. दीपक।

बड़ौदा। 'मन की सच्ची शांति व सम्पूर्ण स्वास्थ्य' विषय पर सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. डॉ. गिरीश पटेल। ध्यानपूर्वक सुनते हुए गणमान्य जन।

गांधीनगर-गुज.। 'विश्व शांति योग तपस्या भट्ठी' का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. सूर्य,माउण्ट आबू, ब्र.कु. कैलाश, ब्र.कु. रंजन, ब्र.कु. तारा, ब्र.कु. कांति तथा अन्य।

इन्दौर-म.प्र.। 18 जनवरी ब्रह्माबाबा के पुण्य स्मृति दिवस पर श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए ब्र.कु. ओमप्रकाश। साथ हैं ब्र.कु. बहनें।

नरसिंगपुर। 'मूल्यनिष्ठ पत्रकारिता' विषय पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलन कर शुभारंभ करते हुए ब्र.कु. प्रो. कमल दीक्षित तथा अन्य।